Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

वैदिक संस्कृति में चिकित्सा विज्ञान

डॉ. ज्योति कपूर
एसोसियेट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय,
प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number : 315-318

Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 20 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

सारांश – आधुनिक युग में आयुर्वेद में प्रयोग में आने वाले औषाधीय पादपों का संरक्षण किया जाना भी परम आवश्यक है। वनों के अत्यधिक दोहन, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आदि के कारण कई औषधीय प्रजातियाँ लुप्त प्रायः हो गयी है। अतः इनके संरक्षण हेतु आधुनिक तकनीकों यथा जैव प्रौद्योगिकी, जर्मप्लाज्म संरक्षण एवं जीन बैंक स्थापित करके भी औषधीय पादपों का संरक्षण किया जा सकता है। यदि इसी गति से वृक्ष संपदा को नष्ट किया जाता रहेगा तो वो दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से प्राणवायु समाप्त होकर यहाँ जीवन ही समाप्त हो जायेगा।

मुख्यशब्द– वैदिक, संस्कृति, चिकित्सा, विज्ञान, औषधीय, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण।

भारत भूमि की समृद्ध प्राचीन परम्परा ही ज्ञान–विज्ञान के अक्षुण्ण भण्डार की रही है। इस पवित्र धरा पर 'वेद' अर्थात ज्ञान का भण्डार ही वैदिक ऋषियों की थाती मानी जाती है। भारतीय जनों की अमित आकांक्षा ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' की है। वैदिक वाड्मय एक विज्ञान सागर है, जिसकी गम्भीरता तथा विस्तार अनन्त है। वैदिक विज्ञान की महत्ता इसी से स्पष्टतः परिलक्षित होती है कि ऋषियों ने निर्देश दिया ''विज्ञानमुपास्व'' विज्ञान की उपासना करो। वैदिक ज्ञान का अगाध स्रोत विज्ञान है। अतः विज्ञान की उपासना करनी चाहिए।

संस्कृति मानव के भूत, वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांगीण प्रकार है, विचार और कर्म के क्षेत्र में राष्ट्र का जो सृजन है, वहीं उसकी संस्कृति है। संस्कृति मानव जीवन की प्रेरक शक्ति स्वीकार्य है। वह जीवन की प्राणवायु है। संस्कृति के माध्यम से हम दूसरों के साथ संतुलित स्थिति प्राप्त करते है। वैदिक विज्ञान को समुन्नत रूप प्रदान करने में संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान मान्य है।

वेद भारतीय संस्कृति के मूल स्रोत तथा सम्पूर्ण संस्कृत वाड्मय की अमूल्य निधि है। वैदिक सम्पदा में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, नीति, आचार विचार व्यवहार व्यवस्था, गणित विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान, सामान्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विज्ञान, शिल्प वेद, न्याय पद्धति, योग, दर्शन, भुगोल आदि विभिन्नन विषयों का उल्लेख प्राप्त होता है। जो कि वर्तमान आधुनिक समाज के लिए एक वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है। वेदों में रोगों के उपचार, निदान तथा औषध विज्ञान का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

चिकित्सा विज्ञान की परम्परा भारत में ऋग्वेद के काल से ही चली आ रही है। मानव जीवन को सुव्यवस्थित रखने के लिए चिकित्सा विज्ञान पर प्राचीनकाल में भी चिन्तन हुआ था। आयुर्वेद शास्त्र चिकित्सा विज्ञान का अपर रुप है। सुश्रुत, चरक, काश्यप और वाग्भट्ट तथा अन्य आचार्यों ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना है। काश्यप ने "पञ्चम वेद'' कहा है।[1] ब्रहमवैवर्तपुराण ''पञ्चम वेद''मानता है।[2] इस प्रकार आयुर्वेद ''पुण्यतम वेद'' के रूप में मान्य है। आयुर्वेदके तीन अंग्गों के प्रवर्तक आचार्य हुए। भरद्वाज काय चिकित्सा के प्रवर्तक हैं उनकी परम्परा का आदिम ग्रन्थ हैं चरक संहिता। धन्वन्तरि शल्य चिकित्सा के प्रवर्तक है उनकी परम्परा का श्रेष्ठ ग्रन्थ है सुश्रुत संहिता। काश्यप ऋषि कौमार भृत्य (बाल चिकित्सा) के प्रवर्तक आचार्य थे जिनके सिद्धान्तों का प्रतिपादक श्लाधनीय ग्रन्थ है काश्यप संहिता।

वैदिक साहित्य के अनुसार अश्विनी कुमार, वरुण, रुद्र, आदि देवता वैद्य थे। अश्विनी कुमारों की ख्याति नेत्र चिकित्सक एवं टूटी हड्डी को जोड़ने में विशेषज्ञ के रूप में थी । वरूण एक विशाल औषधालय के अध्यक्ष थे, जिसमें सहस्त्रों वैद्य कार्य करते थे।[3] वैदिक साहित्य के बाद के काल में भारद्वाज नाम के विद्वान को आयुर्वेद का आदि आचार्य कहा गया है। उनके व उनके शिष्यों के बाद पुनर्वसु से दूसरी परम्परा प्रारम्भ होती है। पुनर्वसु के छः शिष्यों ने आयुर्वेद की खोज को आगे बढ़ाया। इसके बाद चरक का योगदान आता है। चरक संहिता आयुर्वेद का उत्कृष्ट ग्रन्थ है। चिकित्सा विज्ञान में चरक,वाग्भट्ट (छठी शताब्दी) और भावमिश्र (1550) का योगदान सराहनीय है। उन्होने रोगों के निदान एवं उपचार का जो वर्णन किया है, उससे अपरिचित रहकरआजकल के चिकित्सक जनता का अधिक कल्याण नहीं कर सकते। यही नहीं सुश्रुत ई.पू. पाँचवी शताब्दी में हुए थे आौर चिकित्साशास्त्र के सफलआचार्य थे। यह चिकित्सा विज्ञान परम उपयोगी, यशवर्द्धक आयुरक्षक तथा पौष्टिक है।

चिकित्साशास्त्र का प्रमुख लक्ष्य है रोग निवारण। प्राचीन वैदिक संस्कृति में मानव जीवन के दीर्घायु के लिए लता – वन–वनस्पति –वृक्ष– नदी का भी महत्व प्रतिपादित है। नमो वृक्षेम्यः, वृक्षाणां पतये नमः, औषधीनां पतये नमः, अरण्यानां पतये नमः [4] इत्यादि सन्दर्भो से स्पष्ट है कि पार्यावरण के संरक्षण तथा दीर्घायु की रक्षा के लिये इन वनस्पतियों को नमस्कार किया गया है। यहीं नहीं जल, वनस्पति आदि मानव जीवन के लिये उपयोगी व लाभदायक औषधियाँ है।[5] शुद्ध प्राणवायु जीवन के लिये आवश्यक है। वृक्ष एवं वनस्पति वायु को प्राणवान एवं मधुमय बनाते है। प्रदूषण रहित वायु संसार के लिये दवा है। इस प्रकार की वायु को विश्वभेषज कहा गया है।[6] वैदिक काल में मंत्र दृष्टा ऋषियों को ज्ञात था कि भेषजवात हृदय के लिये सुखकर तथा आयुवर्धक होता है।[7] वैदिक युग में अनेक पेड़ पौधों को खोजने और नामकरण का अथक प्रयास किया गया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और विशेष रुप से अथर्ववेद में विभिन्न वनस्पतियों का वर्णन है। वटवृक्ष, पीपल और शाल्मली वृक्ष वैदिक युग से ही संस्कृत साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते है। वृक्ष मानवमात्र को प्राणवायु देते हैं, इसलिए वे मानवमात्र के रक्षक, पोषक और माता – पिता है। मनुष्य प्राणवायु के विना जीवित नहीं रह सकता, अतः वृक्ष, वन, वनस्पतियों और औषधियों को रक्षक बताया गया है। प्राचीन भारत में वनस्पति विज्ञान की युग के अनुरुप प्रगति हुई। प्राचीनकाल से ही वनस्पतियों के प्रति

लोगों का लगाव रहा और आज भी है। किन्तु प्राचीन काल के ऋषियों को वनस्पति जगत के प्रति विशेष लगाव तथा उनको वनस्पतियों के अध्ययन की आवश्यकता आयुर्वेद की दृष्टि से विशेष रूप से थी। ऋग्वेद में वर्णित है।[8]

यत्रौषधीः सभग्मत राजानः समितावि व।

विप्रः स उच्यते मिषग् रक्षोहामीव चातनः।।

ऋग्वेद में एकपूर्ण सूक्त औषधि युक्त है।[9] ऋग्वेद के 23 मंत्रों में औषधियों का महत्व प्रतिपादित किया गया है तथा वनस्पतियों से होने वाले विविध गुणों की महत्वपूर्ण बातें कहीं गयी है। अथर्ववेद के मंत्रों में वृक्ष –वनस्पतियों और ओषधियों की उपयोगिता वर्णित है तथा इनके गुण–धर्म बताये गये है।[10] वृक्ष वनस्पति मानव जाति की रक्षा के लिये अनिवार्य है। यजुर्वेद में वर्णित है कि वृक्ष प्रदूषण को दूर करते है। अतः उन्हें 'शमिता' (शमन कर्ता) प्रदूषण निरोधक कहा गया है।[11] कौषीतकी ब्राह्मण में एक महत्वपूर्ण बात है कि वृक्ष–वनस्पतियाँ परमात्मा का उग्र रुप है।[12] वैदिक साहित्य में औषधि शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है। इसमें सभी प्रकार के वृक्ष वनस्पति आ जाते है। औषधि की सामान्य व्याख्या है। ओषधयः फलः पाकान्ताः'' जिनके फल पकते हैं। औषधि शब्द की कई प्रकार से व्याख्या की गयी है। सायण ने इसकी व्युत्पत्ति दी है –''ओषः पाकः फलपाकः यासु धीयते इति ओषधयः।" अर्थात जिनके फल पकते हैं, उन्हे औषधि कहते हैं। यास्क ने इसकी निरूक्ति दी है कि जो शरीर से उर्जा उत्पन करके उसे धारण करती है या जो दोष प्रदूषण आदि को दूर करती है।[13] शतपथ ब्राहमण में भी ओषधियों को दोष – नाशक कहा है।[14] प्रत्येक व्यक्ति दीर्घायुष्य तथा स्वस्थ जीवन की आकांक्षा करता है। मानव जीवन को सुखी, दीर्घायु और निरोग बनाने के लिये आयुर्वेद का आर्थिक आविर्भाव हुआ है।[15]

प्राकृतिक–तत्वों के आश्रयभूत भेषज –कर्म प्राकृतिक – चिकित्सा से अभिहित है। अथर्ववेद के भैषज्य सम्बन्धी सूक्तों में प्राकृतिक– चिकित्सा को समाहित किया गया है यथा–मिट्टी, पर्वत जल, नदी, स्रोत, मेघवृष्टि, अग्नि, विद्युत, वायु, सूर्य चन्द्रादि, प्राकृतिक पदार्थो से चिकित्सा विधान है। अथर्ववेद में बाँबी की मिट्टी को आस्राव मेषज कहा गया है।[16] जल द्वारा भी कुछ रोगों का निदान है। घाव भरने निद्राक्षय, स्वप्नदोष तथा वंशानुगत रोगों को दूर करने का अनुपम गुण जल में विद्यमान है। वर्षा के जल को शतवृष्ण्य अर्थात सौ गुनी शक्ति वाला गया है – ''पर्जन्यं शतवृष्ण्यम्''[17] वायु द्वारा शरीर के अन्दर रक्त शुद्ध होता है। वायु विश्व भेषज है। सूर्य हृदयरोग, कामला, अपची तथा शिरोरोगों की चिकित्सा में महत्वपूर्ण है। सूर्य मनुष्य के लिये जीवनदाता है। सूर्य की किरणें रोगों के विष को बाहर खींच लेती है। सूर्योपासना, सूर्य नमस्कार तथा सूर्य स्नान का रोग निवारण के लिये महत्व बतलाया गया है। इस प्रकार अथर्ववेद में रोगों के निवारणार्थ भिन्न–भिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ है।

आज के इस आधुनिक युग में आयुर्वेद में प्रयोग में आने वाले औषाधीय पादपों का संरक्षण किया जाना भी परम आवश्यक है। वनों के अत्यधिक दोहन, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आदि के कारण कई औषधीय प्रजातियाँ लुप्त प्रायः हो गयी है। अतः इनके संरक्षण हेतु आधुनिक तकनीकों यथा जैव प्रौद्योगिकी, जर्मप्लाज्म संरक्षण एवं जीन बैंक स्थापित करके भी औषधीय पादपों का संरक्षण किया जा सकता है। यदि इसी गति से वृक्ष संपदा को नष्ट किया जाता रहेगा तो वो दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से प्राणवायु समाप्त

होकर यहाँ जीवन ही समाप्त हो जायेगा। अतः वनों व औषाधियों के संरक्षण व पोषण हेतु हम सभी कृत संकल्प हो जाये।

इस प्रकार वैदिक युग से ही चिकित्सा विज्ञान प्रचलित रहा है, जिसका कालान्तर में विकास हुआ।

संदर्भ सूची

1. एवमेवरवलु वेदनासु–आयुर्वेदमेवानुधावन्ति तस्मात् ब्रूमः–ऋग्वेद, यजुर्वेद सामाथर्ववेदेभ्यः पञ्चमोऽयमायुर्वेद – का. वि.।
2. ब्रहम वै. पु. 1/16/9–10
3. ऋग्वेद – 1, 29, 9
4. यजुर्वेद 16, 17, 16.20
5. मधुमान्नो वनस्पति = ऋग्वेद – 21, 90,80 सुमित्रया न आप ओषधयः सन्तुः = यजुर्वेद = 36.23 ओषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः =यजुर्वेद = 36.96
6. आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रूपः। अथर्वेद = 4, 13, 3
7. त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ।।
8. वात आवातु भेषजं शुभ मयोभु नो हृदे। प्राण आयूंषि तारिषत्। ऋग्वेद = 10/1/86
9. ऋग्वेद – 10, 97.6
10. ऋग्वेद – 10.97.1 से 23
11. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी कृत ग्रन्थ–वेदों में आयुर्वेद पृष्ठ – 235–277 विश्वभारती अनुसन्धान परिषद भदोही।
12. प्राणोवनस्पतिः । कौषी. 12.7 प्राणो वै वनस्पति। ऐतः 2.4 और 10
13. वनस्पति शमिता। यजु. 29.34
14. ओषधयः ओषढ़ धयन्तीती वा। ओषत्येना धयन्तीति वा। दोषं ध्यन्तीति वा निरुक्त–9.27
15. ओषं ध्येति तत् ओषधयः समभवम्। शत 2.2.4.5
16. हिताहितसुखे दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्। मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद स उच्यते। (चरकसूत्र–1.41)
17. अथर्वेद –2.3.4
18. अथर्ववेद – 1.3–1